आर.एन.आई. रजि० नं० HRHIN/2003/10425
डाक पंजीकरण संख्या : P/RTK/10/2011-13

सृष्टि संवत् 1960853114
विक्रम संवत् 2070
दयानन्दाब्द 190

॥ ओ३म्

आर्य प्रतिनिधि

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

E-mail : aryapsharyana@gmail.com दूरभाष : 01262-216222 सम्पादक : सत्यवीर शास्त्री

विदेश में वार्षिक शुल्क : 75 डॉलर विदेश में आजीवन शुल्क : 300 डॉलर

वर्ष : 10 अंक : 8 रोहतक, 21 जुलाई, 2013 वार्षिक शुल्क : 150/- आजीवन 1500/-

आर्यसमाज का गौरव अमर शहीद ब्रह्मचारी उदयवीर

❑ आचार्य हरिदत्त आचार्य, गुरुकुल भैयापुर लाढ़ौत (रोहतक)

प्रस्तावना

भैयापुर (लाढ़ौत) बात पुरानी है। लगभग 21 वर्ष पुरानी। गुरुकुल भैयापुर-लाढ़ौत अभी बन ही रहा था, कुछ ही बन पाया था, एक वर्ष उसे हो गया था। एक ओर गौओं का छप्पर था, कुल दो ही गौवें थीं, पश्चिम में एकमात्र छप्पर वाली मेरी अपनी कुटिया थी, उधर पूर्व में एक भारी-सा कीकर का पेड़ था। चारों ओर हरे-भरे खेत, शान्त, एकान्त और रमणीय वातावरण।

गुरुकुल के वार्षिकोत्सव पर हमने ब्रह्मचारियों के प्रवेश की घोषणा की, सुनते ही जनता में हर्ष की लहर दौड़ गई। लोगों में गुरुकुल को लेकर अत्यन्त उमंग और उत्साह था, क्योंकि गुरुकुल का उद्घाटन एक नैष्ठिक ब्रह्मचारी द्वारा किया जा रहा था। परम तपस्वी, नैष्ठिक ब्रह्मचारी, उद्भट विद्वान्, धर्मरक्षक, गोभक्त, संस्कृति समुद्धारक और सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान आचार्य श्री बलदेव जी ने स्वयं अपने पवित्र कर-कमलों से गुरुकुल की आधारशिला रखी थी। उनकी विशेष ख्याति के कारण प्रवेशार्थियों की लम्बी लाइन लग गई। परन्तु स्थानाभाव और व्यवस्था की दृष्टि से कुल बीस ब्रह्मचारी ही प्रविष्ट किये। उन्हीं ब्रह्मचारियों में एक दिव्य ब्रह्मचारी था उदयवीर।

गुरुकुल का प्रारम्भिक रूप

ब्रह्मचारी उदयवीर का जन्म बलियाना जिला रोहतक में श्री रामफल जी के घर हुआ था। प्राथमिक शिक्षा गाँव में ही प्राप्त की। गुरुकुल खुलने पर पिता ने उदयवीर को गुरुकुल की छठी कक्षा में प्रविष्ट कराया। कक्षा में कुल दस ब्रह्मचारी थे। प्रारम्भिक समय में गुरुकुल का स्वर्णिम युग था, पाँचवें वर्ष तक गुरुकुल में 80 ब्रह्मचारी अन्तेवासी बनकर अध्ययन कर रहे थे। उस समय गुरुकुल में किसी ब्रह्मचारी या अध्यापक को कहीं ताला लगाने की आवश्यकता नहीं पड़ती थी। यम-नियमों का पालन दण्डे से नहीं स्वत: अन्त:प्रेरणा से किया जा रहा था। प्रत्येक प्रात: सन्ध्या-यज्ञ के उपरान्त मेरा अपना प्रेरक उपदेश होता था। वर्ष में केवल चार दिन का सामूहिक अवकाश होता था। दिनचर्या अत्यन्त नियमित होती थी। संस्कृत और धर्मशिक्षा की घण्टी मैं स्वयं लेता था।

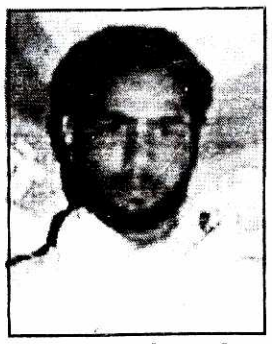

शहीद आचार्य उदयवीर

शिक्षा दीक्षा

ब्रह्मचारी उदयवीर में कुछ विलक्षण गुण थे, वह विश्राम के क्षणों में भी मेरे पास आकर प्रकृति, परमात्मा और आत्मा सम्बन्धी विषयों पर चर्चा करता और समाधान प्राप्त करता। मोक्ष क्या है? जीवन का मुख्य उद्देश्य क्या है? क्या पुनर्जन्म भी होता है? इन्हीं चर्चाओं में अपने साथियों में व्यस्त दिखाई दिया करता था। कभी-कभी सहपाठियों के साथ उपरोक्त विषयों को लेकर वाद-विवाद हो जाता तो दोनों पक्ष मेरे पास आकर समस्या का समाधान प्राप्त करते। झगड़ा था उन्हीं बातों का। शोर था तो इन्हीं बातों का। इस प्रकार के वातावरण में ब्रह्मचारी उदयवीर के गुणों का परिमार्जन होता चला गया। वह निखरता-निखरता अन्यों से विशिष्ट दिखाई देने लगा। मैं भी ऐसे शिष्य को देखकर गद्गद् हो जाया करता और स्नेहातिरेक से अभिभूत होता। किसी कवि ने कहा है—

शैले शैले न माणिक्यं मौक्तिकं न गजे गजे। साधवो न हि सर्वत्र चन्दनं नैव वने वने॥

प्रत्येक पर्वत में मणि नहीं मिलते, हर हाथी के मस्तक में मोती नहीं बनते। सज्जन भी सभी नहीं बनते। हर वन में चन्दन के पेड़ नहीं उगते।

ब्रह्मचारी उदयवीर की माता धन्य है। पिता सौभाग्यशाली हैं, जिन्होंने उसे जन्म देने का सौभाग्य पाया। ऐसे व्यक्तियों के बारे में क्या अधिक कहें—

कुलं पवित्रं जननी कृतार्था, वसुन्धरा पुण्यवती च तेन। विमुक्ति-मार्गे सुखसिन्धुमग्नं लग्नं परे ब्रह्मणि यस्य येतः॥

ब्रह्मचारी उदयवीर ने क्रमश: पढ़ते हुए गुरुकुल में 10वीं कक्षा उत्तीर्ण कर ली जो योग्यता की दृष्टि से 12वीं के समकक्ष थी। पाठ्यक्रम गुरुकुल कांगड़ी का था।

पाठ्यक्रम की गुणवत्ता थी कि विद्याकारी उत्तीर्ण छात्र सीधे शास्त्री में बैठ सकता था। किमधिकेन प्रखर बुद्धिमान् ब्रह्मचारी उदयवीर ने शास्त्री करने की इच्छा प्रकट की उस समय गुरुकुल में शास्त्री की व्यवस्था नहीं हो सकी थी।

पौरोहित्य

मैंने विचार किया कि ब्रह्मचारी की शास्त्री भी हो जाये और इस संस्कारवान् छात्र के संस्कारों में भी कोई कमी न आये पर्याप्त मन्थन के बाद निश्चय हुआ कि महात्मा वेदपाल द्वारा स्थापित आर्यसमाज थर्मल प्लांट पानीपत में पौरोहित्य का कार्य करते हुए पढ़ाई की जाये, साथ-साथ कुछ वक्तृत्व कला का अभ्यास भी होगा। बुद्धिमान् है शास्त्री तो कर ही लेगा, क्योंकि महात्मा वेदपाल जी के निरीक्षण तथा अनुशासन में बिगड़ने का तो प्रश्न ही नहीं हो सकता।

ब्रह्मचारी ने अच्छे अंकों से शास्त्री तो की ही आर्यसमाज थर्मल कालोनी में ऐसा अभूतपूर्व प्रभाव छोड़ा कि अब तक भी उस समाज को इतना अच्छा पुरोहित नहीं मिल पाया, कालोनी के छात्रों को बुलाकर शिविर लगाये, भाषण प्रतियोगिताएं कराई, प्रौढ़ पुरुषों और छात्रों को योगाभ्यास प्रारम्भ कराया। साथ-साथ चिकित्सा के योग भी सिखाए। इस ब्रह्मचारी के कारण आर्यसमाज में आकर लोग अपना अहोभाग्य समझते थे। वहाँ रहते भी मुझ से निरन्तर सम्पर्क बना रहा।

पुनः गुरुकुल में

अब इस ब्रह्मचारी को मैंने पुन: गुरुकुल में बुला लिया और संस्कृत अध्यापक के रूप में रख लिया। पूरे एक वर्ष पश्चात् एक दिन ब्रह्मचारी ने मुझे कहा कि गुरुजी कुछ अलग से बातें करना चाहता हूँ। मैंने ब्रह्मचारी को समय दिया तो कहने लगा कि गुरु जी! आप हमें बार-बार कहा करते थे कि—प्यारे ब्रह्मचारियो!" श्रेय और प्रेय दो मार्ग होते हैं। प्रेयमार्ग—सांसारिक सुख के लिए, अच्छे कर्म करते हुए क्रमश: ब्रह्मचर्य, गृहस्थादि आश्रमों में होते हुए सुख से जीवन यापन करना। दूसरा श्रेयमार्ग—ब्रह्मचर्यपूर्वक साधना तपस्या करते हुए वेद, वेदांग, उपनिषद् तथा छ: शास्त्रों को पढ़कर अधिकाधिक अपना और पराया उपकर करते हुए मुक्ति-पथ का पथिक बनना।" महर्षि दयानन्द, नेताजी सुभाषचन्द्र बोस, चन्द्रशेखर आजाद, रामप्रसाद बिस्मिल जैसों के भी परिवार थे, माता-पिता,

शेष पृष्ठ 7 पर....

सुखी होने के लिये दैवी सम्पदा के स्वामी बनें

ओम् इमं मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृळय।
त्वामवस्युराचके स्वाहा॥ (ऋ० 1.25.19)

अर्थ—(ओम्) हे सर्वरक्षक (वरुण) सर्वव्यापक वरणीय परमात्मन्! (मे इमं हवं श्रुधि) मेरी इस पुकार को सुनो (च) और (अद्यमृळय) अभी-तत्काल सुखी कर दो (अवस्यु त्वां आचके) रक्षा या कृपा का इच्छुक मैं आपको पुकारता हूँ (स्वाहा) इस कामना से मैं यह आहुति देता हूँ।

आदरणीय आर्य बन्धुओ, पूज्य मातृशक्ति,

उपरोक्त वेदमन्त्र द्वारा परमपिता परमात्मा से तत्काल सुखी होने के लिये प्रार्थना की गई है, साथ में यह भी कहा है कि यज्ञ करते समय इस कामना को लेकर मैं यह आहुति देता हूँ। अब विचार करें क्या केवल इच्छामात्र से या उस वरणीय प्रभु को पुकार कर कहने मात्र से हम सुखी हो जायेंगे? नहीं, आत्मा कह रही है कि केवल इस प्रकार कहने और पुकारने से हम सुखी नहीं हो सकते। तो फिर सुखी कैसे होंगे? संसार के सभी मनुष्य सुखी होना चाहते हैं, परन्तु सुखी होने के लिए जिन धार्मिक कर्मों को हमें करना चाहिये वे कर्म करते नहीं हैं, तो फिर कर्त्तव्यपालन के बिना सुख भी प्राप्त नहीं हो सकता। परमात्मा की आज्ञा का पालन हम करते नहीं, वेदमार्ग पर हम चलते नहीं, फिर सुख कहाँ से मिलेगा? वेदमन्त्र में सुखी होने के लिये प्रार्थना की गई है, परन्तु प्रार्थना कब सफल होती है जब हम किसी भी उत्तम कर्म की सिद्धि के लिए परमेश्वर से प्रार्थना करते हैं तो प्रथम उसके लिये स्वयं पूर्ण पुरुषार्थ करें, फिर सहाय के लिए प्रार्थना करना उचित है। हम सबको ज्ञात होना चाहिये कि अधर्म के बिना दुःख नहीं हो सकता तथा धर्म के बिना सुख भी प्राप्त नहीं होता। इसके लिये हम सभी वेद में बताये धर्म मार्ग पर चलकर ईश्वर की आज्ञा का पालन करें।

क्या कहता है वेद?

तं त्वा शोचिष्ठ दीदिवः सुम्नाय नूनमीमहे सखिभ्यः।
स नो बोधि श्रुधि हवमुरुष्याणोऽअघायतः समस्मात्॥
(यजु० 3/26)

भावार्थ—सब मनुष्यों को अपने मित्र और सब प्राणियों के सुख के लिये परमेश्वर की प्रार्थना करना और वैसा ही आचरण भी करना कि जिससे प्रार्थित किया हुआ परमेश्वर अधर्म से अलग होने की इच्छा करने वाले मनुष्यों को अपनी सत्ता से पापों से पृथक् कर देता है वैसे ही मनुष्यों को भी पापों से बचकर धर्म करने में निरन्तर प्रवृत्त होना चाहिये। वेदमन्त्र में यही बताया गया है कि परमात्मा अधर्म से तभी अलग करता है जब प्रार्थना के साथ हम अधर्म को छोड़ धर्म के मार्ग पर चलें।

क्या कारण है मनुष्य धर्म के मार्ग को छोड़कर अधर्म मार्ग पर चलने लग जाता है और जब अधर्म का फल दुःख उसे मिलने लगता है तो दुःखी होकर प्रभु से दुःख दूर करने की प्रार्थना करता है तथा पुण्यकर्मों की ओर अग्रसर होना चाहता है। उत्तर स्पष्ट है—मनुस्मृति को देखो,

❑ देवराज आर्य, सेवानिवृत्त मुख्याध्यापक,
आर्य टैण्ड हाउस, रोहतक मार्ग, जीन्द

धर्मज्ञान के पात्र कौन हैं?

अर्थकामेष्वसक्तानां धर्मज्ञानं विधीयते।
धर्मजिज्ञासमानानां प्रमाणं परमं श्रुति॥
मनु० 1/132

इसके लिए महर्षि दयानन्द सत्यार्थप्रकाश में लिखते हैं कि "**परन्तु जो द्रव्यों के लोभ और काम अर्थात् विषय सेवा में फंसा हुआ नहीं होता, उसी को धर्म का ज्ञान होता है। जो धर्म को जानने की इच्छा करें उनके लिये वेद ही परम प्रमाण है। वेद कहता है कि मनुष्य संसार में सत्यशास्त्रों में कहे अच्छे का विधान और बुरे का त्याग मुक्ति के हेतु कर्मों को करता हुआ ही सौ वर्ष पर्यन्त जीने की इच्छा करे।**"

देवराज आर्य, जीन्द

संसार में जितने भी जीव-जन्तु हमें दिखाई देते हैं उन सब में मनुष्य को श्रेष्ठ बताया गया है, क्योंकि इसमें बुद्धि अर्थात् ज्ञान की बाहुल्यता है। जब यह इतना ज्ञानवान है तो इसके जीवन का लक्ष्य भी विशेष अर्थात् उत्कृष्ट होना चाहिये। क्या धन-सम्पत्ति, जमीन, मकान, बड़े-बड़े उद्योग व्यापार तथा छलकपट से सत्ता हस्तान्तरण करना ही इस मनुष्य जीवन का उद्देश्य है? यदि नहीं तो फिर आज का मनुष्य तो यही सब कुछ कर रहा है। इसका सीधा-सा अर्थ है कि हमने वेद-शास्त्र की बातों को नहीं माना और हम अपने द्वारा निर्दिष्ट मार्ग पर सरपट दौड़ रहे हैं, जिसका परिणाम होगा दुःख, कष्ट और क्लेश यही सब हम देख रहे हैं।

कोई भी व्यक्ति दुःखी होना नहीं चाहता साथ ही दुःख के कारणों को भी नहीं छोड़ना चाहता। भूल गये हम वर्णाश्रम मर्यादा को ब्रह्मचारी से लेकर संन्यासी तक तथा ब्राह्मण से लेकर शूद्र तक सभी अर्थ और काम की पूर्ति की ज्वाला में झुलस रहे हैं। इन दोनों ही विषयों ने इतना उग्ररूप धारण कर लिया कि कुछ लोग मूर्ख, अज्ञानी, वेद-शास्त्र के ज्ञान से रहित तथा अनपढ़ होते हुये भी अपनी कामनाओं की पूर्ति के लिए धर्मगुरु, भविष्यवक्ता, मन्त्र द्वारा इच्छा पूर्ति तथा धनप्राप्ति के उपाय बताने वाले महात्मा बन गये जो भोली जनता को पाप, दुःख और पाखण्डों की ओर धकेल रहे हैं। ऐसे लोग स्वयं तो पाप कर्मों का फल दुःख रूप में भोगेंगे ही, साथ में जो लोग इनके पाखण्ड रूप जाल में फँस जाते हैं, वे भी इनसे अधिक नारकीय जीवन व्यतीत करेंगे।

मानव जीवन का लक्ष्य तो बहुत ही गहन और गम्भीर है। अनेक जन्म प्राप्त कर शुभकर्म करते-करते मानव का यह शरीर उस परमपिता परमात्मा की प्राप्ति अर्थात् मोक्षप्राप्ति के लिये मिला है। यह मोक्ष वेदानुकूल आचरण के द्वारा धर्मानुसार आहार, विचार, व्यवहार, श्रेष्ठाचार तथा सत्य आधार को जीवन का अङ्ग बनाने से ही प्राप्त हो सकता है।

फिर सुख को प्राप्त करने के लिए क्या करें? वेद में कहा है कि—

मा नः शंसोऽअररुषो धूर्तिः प्रणङ् मर्त्यस्य।
रक्षा णो ब्रह्मणस्पते॥ (यजु० 3/30)

भावार्थ—मनुष्य को सदा उत्तम-उत्तम काम करना और बुरे-बुरे काम छोड़ना तथा किसी के साथ द्रोह वा दुष्टों का संग भी न करना और धर्म की रक्षा वा परमेश्वर की उपासना, स्तुति और प्रार्थना निरन्तर करनी चाहिये। सुख-प्राप्ति के लिये वेद का स्पष्ट आदेश है कि हम धर्म के कार्यों को सदैव ही निरन्तर करते रहें। इसके लिये हम 'दैवी सम्पदा' के स्वामी बनें अर्थात् सद्गुणों को जीवन में धारण करें। ऐसा करने से हमारा जीवन सुख, शान्ति और आनन्द से भरपूर हो जायेगा साथ ही हमें अपने मानव जीवन के लक्ष्य की प्राप्ति भी होगी। इसके लिए भगवान् श्रीकृष्ण गीता 16/1 में कहते हैं कि—

अभयं सत्त्वसंशुद्धिर्ज्ञानयोग व्यवस्थितिः।
दानं दमश्च यज्ञश्च स्वाध्यायस्तप आर्जवम्॥

अभयम्-हमारे जीवन में निर्भयता आनी चाहिये। यह तभी आयेगी जब हम दूसरों का शोषण न करें, निष्पाप हों, विलास और वासना रहित हों। संयमी बनकर अन्तःकरण को निर्मल बनाकर परोपकारी बनें।

तत्त्वसंशुद्धि क्या है?

अन्तःकरण की पूर्ण निर्मलता तथा हृदय की विशालता और निर्मलता। ईश्वर में दृढ़विश्वास कर उसकी आज्ञा पालन करने से बुद्धि शुद्ध होकर धर्म के कार्य करती है। इसलिये ईश्वर के चिन्तन और ध्यान में निरन्तर दृढ़ स्थिति होनी चाहिये।

दान—आज वास्तव में हम दान धर्म के वास्तविक स्वरूप को भूलकर तामसिक दान की प्रक्रिया की ओर बढ़ रहे हैं। लोग ऐसे कार्यों के लिये धनसंग्रह कर रहे हैं जहाँ किसी भी प्रकार का लोकोपकार का कार्य नहीं होता अपितु वेद और धर्म के विरुद्ध प्रचार करके लोगों को नास्तिक बनाया जाता है। ऐसे पाखण्डी, बगुलाभक्त, अधर्मी लोगों को दान न देकर धार्मिक, परोपकारी, वेदप्रचारक, ज्ञाननिष्ठ महानुभावों को दान देकर वेदप्रचार में सहायक बनें।

दम का अर्थ है इन्द्रियदमन अर्थात् इन्द्रियों को सन्मार्ग पर चलाना तथा उनका उचित और आवश्यक आहार देना। यदि हम सुखी रहना चाहते हैं, तो मन को सत्य के द्वारा शुद्ध करके उसके आधीन सब इन्द्रियों को धर्म मार्ग पर चलाकर संयमी बनें, क्योंकि संयम और सदाचार ही धर्म के स्तम्भ हैं।

यज्ञ अर्थात् पञ्चमहायज्ञों को जीवन का अंग बनायें। यज्ञों के द्वारा ही यह शरीर ब्रह्म-प्राप्ति के योग्य बनता है। स्वाध्याय ब्रह्मयज्ञ का एक अङ्ग है। प्रतिदिन वेद का स्वाध्याय करें जैसा कि महर्षि दयानन्द जी ने वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म बताया है। हम उस परमधर्म का पालन करें। कर्त्तव्य पालन व धर्म के लिए कष्ट सहन करना तप कहलाता है। जब हम तप के मार्ग पर चलकर धर्म के कार्यों को जीवन में करेंगे तो सुख की प्रभात हमारे सामने होगी।

मैं नहीं जानता

-: वेद-मन्त्र :-

न वि जानामि यदिवेदमस्मि निण्यः संनद्धो मनसा चरामि।
यदा मागन्प्रथमजा ऋतस्यादिद्वाचो अश्नुवे भागमस्या॥

(अथर्व० 9/10/15)

अर्थ—(यदि वा इदम् अस्मि) मैं यह हूँ या कुछ और हूँ यह (न विजानामि) नहीं जानता। (निण्यः) अपने स्वरूप को भूला हुआ (मनसा सन्नद्धः) मन वशीभूत या बन्धन में बँधा हुआ (चरामि) विचरण कर रहा हूँ। (यदा) जब (मा) मुझे (प्रथमजा ऋतस्य) सृष्टि से आदि ऋषियों के हृदय में प्रकटित सत्य ज्ञान का प्रकाश करने वाली वेदवाणी (आगन्) प्राप्त हुई तब (आत् इत्) इसके पश्चात् ही (अस्याः) इस वेदवाणी से मैं (भागम्) उस भजनीय, सेवनीय आत्म-ज्ञान को (अश्नुवे) प्राप्त होता हूँ।

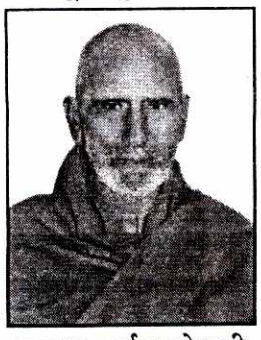

पूज्य आचार्य बलदेव जी

मैं कौन हूँ? क्या इस पाञ्चभौतिक शरीर का नाम ही मैं शब्द से अभिप्रेत या सम्बोधित किया जाता है। यदि ऐसा है तो मृत्यु के समय भी तो यह शरीर वैसा ही रहता है जैसा कि चेतनावस्था में था। उस समय सभी यही तो कहते हैं कि पिंजरे से पंछी उड़ गया।

कई बार मेरा विचार बनता भी है कि अपने आपको जानने का उपाय करूँ। परन्तु उस समय मेरा मन एवं इन्द्रियाँ कहती हैं कि पहले हमें हमारा आहार प्रदान कीजिए फिर आगे की सोचना।

उस समय मैं निण्य अर्थात् निगडित और अपने आपको भूला हुआ फिर जैसा मन चलाना चाहता है वैसे ही विवशतावश उसके पीछे चलता हूँ। मेरी दशा उस घुड़सवार जैसी हो गई है जिसके हाथ से लगाम छूट गई और उदण्ड घोड़ा दौड़ा चला जा रहा है। किसी व्यक्ति ने पूछा अरे! इतनी तेजी से घोड़ा भगाये जा रहे हो, आपको कहाँ जाना है? घुड़सवार ने कहा—कहाँ जा रहा हूँ, इसका तो मुझे भी पता नहीं है? अब यह घोड़ा जहाँ ले जाए वहीं मेरा पड़ाव होगा।

इन बेकाबू इन्द्रियाश्वों को कैसे नियन्त्रित किया जाये इसका उपाय मुझे सूझ ही नहीं रहा। यदि किसी प्रकार घोड़ा रुक जाये और लगाम मेरे हाथ में आ भी जाये तो भी मैं अपना गन्तव्य स्थल और इन्द्रियाश्वों को कैसे वश में रखा जाये इसकी जानकारी भी नहीं रखता।

मेरे हितैषी मित्र ने उपाय सुझाया है—"अपने स्वरूप की पहचान और गन्तव्य स्थल की सही जानकारी पानी है तो उस प्रभु की दी गई वेदवाणी की शरण में जाओ। वही तुम्हारा मार्गदर्शन करेगी।" प्रभु स्वयं कह रहे हैं—

स्तुता मया वरदा वेदमाता प्र चोदयन्तां पावमानी द्विजानाम्। आयुः प्राणं प्रजां पशुं कीर्तिं द्रविणं ब्रह्मवर्चसम्। मह्यं दत्त्वा व्रजत ब्रह्मलोकम्॥

(अथर्व० 19/71/1)

हे मनुष्यो! मैंने तुम्हारे लिये सभी कामनाओं को पूरा करने के लिये वेदवाणी का ज्ञान दिया है। इसका अधिक सेअधिक प्रचार-प्रसार करो। यह द्विजों को पवित्र करने वाली है। सभी लौकिक पदार्थों की प्राप्ति और अन्त में ब्रह्मलोक तक पहुँचाने वाली यह वेदमाता है।

जब से मैंने वेदमाता की शरण ली है, मेरे ज्ञानचक्षु खुलते जा रहे हैं। हृदय में जो अविद्या की गांठ है, उसके बन्धन ढीले हो रहे हैं। अब मैं जान गया कि मन का दास नहीं हूँ, अपितु वह मेरा नौकर है। उसे कैसे वश में किया जाये? यह मैं जान गया हूँ। मुझे अर्जुन की यह उक्ति समझ में आ गई है जो गीता के अठारहवें अध्याय में संकलित है—

नष्टो मोहः स्मृतिर्लब्धा त्वत् प्रसादान्मयाच्युत।
स्थितोऽस्मि गतसन्देहः करिष्ये वचनं तव॥ (गीता 18/73)

हे प्रभो! मेरा भ्रम दूर हो गया है। मेरे सारे सन्देह मिट गये हैं। मैं तेरी वेदवाणी में बतलाये मार्ग पर चलता हुआ अन्त में तेरे दर्शन करूँगा।

—आचार्य बलदेव

'आर्य प्रतिनिधि' साप्ताहिक की सदस्यता ग्रहण कर तथा धार्मिक एवं सामाजिक आयोजनों में 'आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा' को सहयोग राशि भेजकर वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार में सहभागी बनिये।

सम्पर्क—01262-216222

आर्य नेता श्री कन्हैयालाल आर्य जी को पितृशोक

अपने जीवन के 94 वसन्त देखने के पश्चात् आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के वरिष्ठ उपप्रधान एवं आर्य केन्द्रीय सभा गुड़गाँव के प्रधान के पिता श्री रामचन्द्र आर्य लम्बी बीमारी के पश्चात् स्वर्ग सिधार गए। श्री रामचन्द्र आर्य एक निष्ठावान् समाजसेवी एवं स्पष्ट वक्ता थे। उनकी करनी और कथनी सदा एक जैसी थी। गुड़गाँव व गुड़गाँव से बाहर कोई ऐसी संस्था नहीं, जिसे वह अपनी पवित्र कमाई से सहयोग न करते हों। किसी भी समाचार-पत्र में कोई भी सहायता की अपील आने पर वह द्रवित हो जाते थे और अपनी पवित्र कमाई में से उसे सहयोग अवश्य किया करते थे। वह अपने पीछे एकमात्र पुत्र श्री कन्हैयालाल आर्य एवं बड़ी पुत्री श्रीमती ईश्वर देवी एवं छोटी पुत्री श्रीमती पुष्पा देवी एवं पत्नी श्रीमती जमना देवी को छोड़कर गये हैं। अन्त्येष्टि-संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से पाँच वैदिक विद्वानों द्वारा किया गया।

श्रद्धाञ्जलि सभा का प्रारम्भ यज्ञ के ब्रह्मा श्री सत्यदेव शास्त्री जी के शान्तियज्ञ द्वारा हुआ। श्री नरेन्द्र आर्य वशिष्ठ के प्रभु-भक्ति के भजन हुए। श्री अशोक शर्मा वरिष्ठ साहित्यकार ने श्रद्धाञ्जलि सभा का संचालन किया। श्रद्धाञ्जलि सभा में आर्यजगत् के उच्चकोटि के विद्वान्, संन्यासी, सन्त पधारे हुए थे। उनमें से प्रमुख रूप से सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान आचार्य बलदेव जी महाराज, हरयाणा आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान आचार्य विजयपाल जी, निष्ठावान् सन्त आर्य तपस्वी जी, आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ एवं फर्रुखनगर के संचालक स्वामी धर्ममुनि जी महाराज, कर्मयोगी आचार्य सत्यवीर जी शास्त्री, योगाचार्य डॉ. ओमप्रकाश पाली वाले एवं पौराणिक जगत् के महामण्डलेश्वर स्वामी धर्मदेव जी महाराज ने अपनी श्रद्धाञ्जलि दी।

इसके अतिरिक्त आर्यजगत् के अन्य संन्यासी स्वामी सत्यानन्द जी अध्यक्ष सत्यधर्म प्रकाशन, हरीश स्वामी जी, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के मन्त्री श्री सत्यवीर शास्त्री, श्री जिलेसिंह, उपमन्त्री श्री राजवीर जी, आर्य प्रतिनिधि सभा देहली के महामन्त्री श्री विनय आर्य, आर्य केन्द्रीय सभा देहली के महामन्त्री श्री राजीव आर्य, आर्यवीर दल हरयाणा के महामन्त्री वेदप्रकाश आर्य, सार्वदेशिक आर्यवीर दल के उपमंत्री श्री चन्द्रदेव आर्य, हरियाणा गोशाला संघ के सभी अधिकारी, आचार्य अरविन्द शास्त्री, श्री शिवदत्त शास्त्री, श्री रत्नेश शास्त्री, श्री मेहरचन्द सेतिया, डॉ. सत्येन्द्र प्रकाश सत्यम्, गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ के आचार्य ऋषिपाल जी, गुरुकुल भादस के आचार्य रामनिवास जी, गोशाला पिनगवां के संचालक श्री वेदप्रकाश परमार्थी, फरीदाबाद आर्य केन्द्रीय सभा के महामन्त्री बलबीर मलिक, आर्य वेदप्रचार मण्डल, मेवात तथा गुड़गाँव की सभी 20 आर्यसमाजों के सदस्य पदाधिकारी सहित अनेक विद्वान् व कार्यकर्त्ता पधारे हुए थे। पौराणिक जगत् से केन्द्रीय सनातन धर्म सभा के प्रधान श्री सुरेन्द्र खुल्लर, महामन्त्री श्री देवराज आहूजा, उपप्रधान कंवरभान वधवा, प्रेस-सचिव बालकिशन खत्री, पंडित मनोहरलाल शास्त्री, श्री गोपीनाथ मन्दिर के गद्दीनसीन श्री विनोद वैद्य, हनुमान मन्दिर शिवाजी नगर की अध्यक्षा माता देवता सहित अनेक विद्वान् पधारे हुए थे।

राजनैतिक जगत् से पूर्व सांसद श्रीमती सुधा यादव, हरियाणा विधान सभा के पूर्व उपाध्यक्ष, श्री गोपीचन्द गहलोत, हरियाणा के पूर्व मन्त्री श्री धर्मवीर गाबा, श्री कन्हैयालाल पाहवा, श्री तिलकराज मल्होत्रा, गुड़गाँव नगर निगम के वरिष्ठ उपमहापौर श्री यशपाल बतरा, नगर निगम पार्षद सीमा पाहूजा, श्री शशि दुआ, श्रीमती रजनी साहनी तथा सामाजिक जगत् से विश्व हिन्दू परिषद् हरयाणा के अध्यक्ष डॉ. इन्द्रजीत यादव, बजरंग दल के अध्यक्ष श्री महेन्द्र कुमार जी, महर्षि दयानन्द एजुकेशन ट्रस्ट के उपप्रधान जयदेव हसीजा, शिक्षाविद् श्री धर्मपाल मैनी, डी.ए.वी. जगत् से श्रीमती अनीता मक्कड़, एस.जी.टी. विश्वविद्यालय के संयुक्त रजिस्ट्रार डॉ. अशोक दिवाकर, गुड़गाँव अधिवक्ता (वकील) कौंसिल के पूर्व अध्यक्ष श्री कुलभूषण भारद्वाज, हरयाणा हाई कोर्ट के रजिस्ट्रार श्री अशोक कुमार अरोड़ा, गुड़गाँव पंजाबी सभा के अध्यक्ष डॉ. अशोक तनेजा, औद्योगिक जगत् से श्री देशबन्धु, श्री एस.के. मेहता सहित अनेक गणमान्य व्यक्तियों ने भाग लेकर श्री रामचन्द्र आर्य जी को भावभीनी श्रद्धाञ्जलि दी। पगड़ी रस्म कराई गई तथा शान्तिपाठ के साथ कार्यवाही सम्पन्न हुई।

तथाकथित हरयाणा सभा की सच्चाई

❑ सत्यवीर शास्त्री, मन्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

11.07.2013 के दैनिक समाचार पत्रों में अनेक शीर्षकों से खबर छपी। जैसे—आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की दो फाड़, व आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को भंग करके पुन: आर्य प्रतिनिधि सभा की कार्यकारिणी का गठन आदि ब्यान अनेक समाचार पत्रों में पढ़ने को मिले, जो कि निराधार तथा निराश व हताश लोगों के ब्यान हैं। आज भी आचार्य विजयपाल जी आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के संवैधानिक प्रधान तथा सत्यवीर शास्त्री सभामन्त्री हैं। दयानन्दमठ रोहतक में सभा कार्यालय सुचारु रूप से आचार्य विजयपाल जी के नेतृत्व में कार्य कर रहा है। उसका एक साप्ताहिक समाचार पत्र '**आर्य प्रतिनिधि**' जिसमें यह लेख आप पढ़ रहे हैं, प्रति सप्ताह निकलता है। इसका अपना बैंक बैलेंस है। अनेक सामाजिक, शैक्षणिक तथा धार्मिक संस्थायें इसके आधीन कार्य कर रही हैं।

इस हरयाणा तथा आर्य प्रतिनिधि सभा देहली जिसके प्रधान ब्र० राजसिंह, उपप्रधान धर्मपाल जी तथा मन्त्री विनय आर्य जी के स्वामित्व में गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय कार्य कर रहा है जिसके आधीन अनेक स्कूल व कालेज कार्य कर रहे हैं। इस हरयाणा सभा का विधिवत् चुनाव रजिस्ट्रार फर्म एण्ड सोसायटी की देखरेख में, एस.डी.एम. जिला रोहतक (हरयाणा) की उपस्थिति में हरयाणा पुलिस के दो डी.एस.पी., अन्य पुलिस अधिकारियों तथा सैकड़ों पुलिस बल की सुरक्षा में तथा सार्वदेशिक सभा की ओर से प्रेषित चुनाव अधिकारी महामना धर्मपाल आर्य तथा आर्य प्रतिनिधि सभा देहली के महामंत्री विनय आर्य द्वारा दिसम्बर 2010 में कराया गया है जिसका अगला चुनाव दिसम्बर 2013 को होना सम्भावी है। इस विधिवत् चुनाव द्वारा गठित हरयाणा सभा की कार्यकारिणी को अकारण भंग करने का किसी को भी अधिकार नहीं है। आर्यों की सर्वोच्च संस्था सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली के प्रधान त्यागी, तपस्वी, वैदिक विद्वान्, व्याकरण शास्त्र के पण्डित, न्यायप्रिय आचार्य बलदेव जी हैं। ऐसे विद्वान् सुचारु रूप से धर्मपूर्वक न्याय-नीति से कार्य करने वाली आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, जिसने समय-समय पर आर्यसमाज के अनेक आन्दोलनों में विजय प्राप्त करके केवल मात्र राष्ट्र में ही नहीं पूरे विश्व में आर्यसमाज के नाम को उज्ज्वल किया है। ऐसी कर्त्तव्यनिष्ठ सभा को आचार्य बलदेव जी जैसे विद्वान् कैसे भंग कर सकते हैं?

सच्चाई यह है कि ये लोग आर्य-समाज में विघटन पैदा करने के लिए समय-समय पर राजनैतिक संगठनों से तालमेल करके उनसे लाभ उठाने का प्रयास करते हैं। जैसे वेशपंथी साधुओं ने केन्द्र व देहली सरकार से मिलकर सार्वदेशिक सभा देहली के कार्यालय पर कब्जा करके करोड़ों की सम्पत्ति की लूट मचाई है। आज भी वहाँ इनकी सहायता के लिए पुलिस बल पहरे पर उपस्थित है। इसी प्रकार ये लोग असत्लोक आश्रम करौंथा के असत् महन्त रामपालदास का भी परोक्ष रूप से समर्थन करते हुए कहते हैं कि आचार्य बलदेव ने करौंथा आन्दोलन में अनेक व्यक्तियों को घायल करवा दिया। आचार्य बलदेव जी हरयाणा सरकार की नासमझी के कारण लगभग प्रात: 7:30 बजे गिरफ्तार कर लिये गये। लाठीचार्ज व गोली चली है। लगभग 10 बजे फिर आचार्य बलदेव जी ने सत्याग्रहियों को घायल कैसे करवाया? कोई नेता क्या स्वयं अपने संगठन को नष्ट करवाता है? इन लोगों का समाचार-पत्रों में यह वक्तव्य भी आचार्य बलदेव जी का प्रत्यक्ष रूप से विरोध तथा सरकार व रामपालदास का परोक्ष रूप से समर्थन है। अत: समाज को ऐसे सामाजिक दोमुँहे सर्पों से बचकर रहना चाहिए।

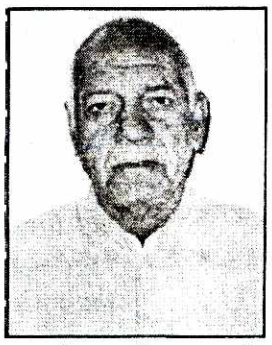

सत्यवीर शास्त्री, सभामन्त्री

इन्होंने आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की जो तथाकथित कार्य-कारिणी का गठन किया है उनमें अधिकतर व्यक्तियों के रक्त के एक-एक कण में भ्रष्टाचार, अनैतिकता तथा गद्दारी के अंश समाए हुए हैं।

इनके एक उच्च अधिकारी के परिवार के सहोदर ने आर्यसमाज रोहणा के तात्कालीन प्रधान स्वर्गीय महाशय दरियाव सिंह जिसकी पूरे इलाके में ईमानदारी व सच्चाई के कारण मान-प्रतिष्ठा रही है, उन (आर्यसमाज रोहणा) से 90 हजार रुपये ब्याज के रूप में उधार आज से लगभग दस वर्ष पूर्व ले लिये। गाँव के सज्जन व्यक्तियों का लेन-देन लगभग विश्वास के आधार पर बिना लिखित पढ़त के होता आया है। इसी प्रकार महाशय जी ने भी विश्वास के आधार पर उन्हें 90 हजार रुपये दे दिये और ये तथाकथित आर्यसमाज के नेता देने के समय इंकार कर गये। मैं आर्यजनता तथा सामाजिक व्यक्तियों से पूछना चाहता हूँ कि इससे बड़ा आर्यसमाज तथा महाशय दरियाव सिंह के साथ और कोई विश्वासघात हो सकता है क्या? यदि मेरे इस कथन को आप मिथ्या मानते हैं, तो महाशय दरियाव सिंह का तो स्वर्गवास हो चुका है उनका भतीजा वेदप्रकाश सामाजिक व्यक्ति है। अत: उससे पूछ लिया जाये। यदि उसको पूछ लिया जाये। यदि उसको भी झूठा करार दिया जाता है तो मैं लिखित में ब्यान दे रहा हूँ कि 90 हजार रुपये लेने वाले ये व्यक्ति दहिया खाप की पंचायत बुलाकर अपने पुत्रों के सिर पर हाथ रखकर कहें कि हमने नब्बे हजार रुपया नहीं लिया। यदि लिया है तो वापिस कर दिया। उसके उपरान्त यदि मेरा कथन असत्य सिद्ध होता है तो पंचायत व समाज जो दण्ड देगा उसे मैं सहर्ष स्वीकार करूँगा।

मैं यहाँ पर किसी व्यक्ति की छवि दूषित नहीं करना चाहता अत: यह सत्य घटना इसलिये प्रकाशित कर रहा हूँ कि ये व्यक्ति आचार्य बलदेव जी जैसे तथा अन्य वैदिक विद्वान् जिनकी छवि पूर्णिमा के चन्द्रमा के समान उज्ज्वल एवं स्वच्छ है, उनके ऊपर ये झूठे मनघड़न्त व अनर्गल कीचड़ न उछालें अन्यथा इनकी अनेक ऐसी सत्य घटनाएँ हैं, जिनके प्रकाशित होने पर इनका जीवन दूभर हो जायेगा। अत: बन्द पिटारे को बन्द ही रखा जाये तो अच्छा है अन्यथा दुर्गन्ध फैल जाएगी।

मैं इन तथाकथित नेताओं से पूछना चाहता हूँ कि हरयाणा के ग्रामों व नगरों में सैकड़ों आर्यसमाज हैं जिन्होंने सम्बन्धित फार्म भरकर आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा से सम्बन्ध स्थापित किया है। ये तथाकथित नेता सम्बन्धित फार्मों सहित उन सैकड़ों आर्यसमाजों से केवलमात्र दस आर्यसमाजों के नाम उल्लिखित करें, जो इनका समर्थन करती हैं।

सच्चाई यह है कि इन सज्जनों के पास एक भी आर्यसमाज ऐसा नहीं है जो सम्बन्धित फार्म के साथ यह लिखकर दे सकती हो, जो यह कहें कि हमारा इस तथाकथित सभा से सम्बन्ध है। बिना किसी आर्यसमाज के प्रतिनिधि (डेलीगेट) के कोई भी व्यक्ति अधिकारी बनने की बात तो दूर, वोट डालने का भी अधिकारी नहीं होता। आप द्वारा बनाई गई तथाकथित कार्यकारिणी में अनेक व्यक्ति ऐसे हैं, जो कि किसी भी आर्यसमाज से प्रतिनिधि नहीं हैं। अत: आप द्वारा गठित यह सभा असंवैधानिक तथा झूठ का पुलिंदा है। समस्त भारत के आर्यजन आचार्य बलदेव जी को अपना नेता मानते हैं। इसके अतिरिक्त जिस अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन का आप लोगों ने वर्णन किया है उसमें 17 अन्य देशों ने भी भाग लेकर अपना नेता आचार्य बलदेव जी को स्वीकार किया है। अत: सम्पूर्ण विश्व के आर्यों के नेता के रूप में आज आचार्य बलदेव जी ही दृष्टिगोचर हो रहे हैं।

रही आप लोगों के साथ सम्मेलन में मार-पीट वाली बात, जो अनार्य आर्यों के सम्मेलन में लड़ाई-झगड़ा और मार-पीट के लिए आये थे उन्हें देहली पुलिस ने मार-पीटकर भगा दिया। अपराधियों को तो सजा ही मिला करती है, इनाम कौन दिया करता है? अत: तुम्हारा उपालम्भ व्यर्थ है। आपने कहा है कि हाई कोर्ट ने आचार्य बलदेव जी की सभा को मान्यता नहीं दी है। क्या देश के प्रधानमन्त्री, राज्यों के मुख्यमंत्रियों को कोर्टों से मान्यता लेनी पड़ती है? आज तक तो आप लोगों ने कभी भी कैप्टन देवरत्न को सार्वदेशिक सभा का प्रधान स्वीकार नहीं किया। धन्य हैं आप लोग कम से कम मृत्यु के उपरान्त तो उन्हें प्रधान स्वीकार किया। आप बतायें, यदि प्रधान का स्वर्गवास हो जाये तो उपप्रधान ही प्रधान के पद पर आसीन होगा? अथवा

शेष पृष्ठ 5 पर....

आर्यसमाज का धुरन्धर कार्यकर्त्ता चला गया

गतांक से आगे....

करौंथा सत्याग्रह में उसकी भूमिका के बारे में विस्तार से लिखना उचित प्रतीत नहीं होता, मामला प्रशासन व अपराध शाखा के पास विचाराधीन है। प्रशासन पहले ही उसे उपद्रवी दिखाने की योजना बना चुका था ताकि उसकी हत्या का कलंक व अपराध अपने सिर से उतार सके। यहाँ उस वीर शहीद के साथ बिताए कुछ हल्के-फुल्के क्षणों को याद करना चाहूँगा।

गर्मी की छुट्टियों में हम जून मास में दूरस्थ क्षेत्र में प्रचार की तैयारी व आर्यजनों से मिलने जाते थे। उस समय प्रात: शीघ्र निकलने के कारण भोजन नहीं कर पाते थे। रास्ते में दोपहर में मैं उसे मक्के का भुट्टा/छल्ली दिलवा देता था। बाद में वह बहुत हँसता था, कहता था कि आपने यह अच्छा तरीका अपनाया है दस रुपये की खाने की ऐसी वस्तु है, जिसे खाते-खाते सफर भी काफी कट जाता है तथा मुँह थकने से पेट भी तुरन्त भर जाता है। उस

❑ प्राचार्य अभय आर्य, रोहतक

समय हमारे पेट में गर्मी बनने से मुख में व गले में छाले हो गए थे। उसकी जिह्वा बीच से फट गई थी। मैं मिलने वाले प्रमुख लोगों के सामने उसकी जिह्वा की स्थिति दिखाता था। एक दिन उसने मुझसे कहा कि आप मेरी जिह्वा का प्रयोग भी आर्यसमाज के प्रचार के लिए कर रहे हो। आप मेरी जिह्वा इसीलिए दिखाते हो ताकि लोगों को पता चले कि आर्यसमाज में भी ऐसे मेहनती कार्यकर्त्ता हैं। तब हम दोनों जी-भरकर हँसे थे।

शहीद संदीप आर्य

पूरा दिन कार्य करने के बाद रात को जब उसका फोन आता था तो पहली बात मुझसे यही कहता था—"और इससे ज्यादा बताओ क्या करें?" कई बार मैं उसे फोन करके उसके इस वाक्य को दोहरा देता था, उसके बाद फिर हँसी के फव्वारे छूट पड़ते थे तथा सारी थकान मिट जाती थी।

विभिन्न परिस्थितियों को देखते हुए बलिदान स्पष्ट दिखाई दे रहा था। मैं उसको अनेक बार कहता था कि हम भी बलिदान दे देंगे व हमारे चित्र बलिदान भवन में टंगे होंगे। मैं उसे कहता था कि यदि मेरा बलिदान हो गया तो तू मेरे बच्चों को नहीं संभालेगा व स्वयं के कार्यों में व्यस्त हो जायेगा। वह भी निजी व्यक्तियों से ऐसी ही बातें करता था। वह कर्मवीर व धर्मवीर युवक मुझसे तो कहीं बहुत ज्यादा आगे निकल गया। 25.12.1985 को उसका जन्म हुआ तथा 12.05.2013 को वह वीरगति को प्राप्त हुआ। शाहपुर (पानीपत) गाँव में माता प्रेमो व पिता राममेहर के घर जन्म लेने वाले दो पुत्रों में यह छोटा पुत्र अपने कुल के साथ-साथ गाँव के नाम को भी धन्य कर गया।

आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द ने पाखण्ड-खण्डन को परमधर्म माना है। उसकी पाखण्ड के विरुद्ध सत्याग्रह में इस वीर युवक ने अपने प्राणों की आहुति देकर आर्यसमाज के इतिहास में अपना नाम स्वर्णिम अक्षरों में लिखा गया। सत्य, सनातन वैदिक धर्म की रक्षा के लिए प्राण देकर वह समस्त मानवता में अपना नाम धन्य कर गया।

अन्त में परमपिता परमात्मा से यही प्रार्थना है कि जिस पथ पर मेरा यह अभिन्न मित्र चला उसी पथ पर मैं चलता रहूँ। साधु-संन्यासियों, विद्वानों, वैदिक धर्म की रक्षा के लिए कल्याणकारी पथ पर चलते हुए मेरे पैर कभी न डगमगाए। हे मित्र! तेरे जाने के बाद जीवन में क्या आनन्द है? बस यही उद्देश्य है जिसके लिए हम जीवित हैं और इस उद्देश्य के लिए जीना ही तेरे प्रति सच्ची श्रद्धांजलि है।

तथाकथित हरयाणा सभा की... पृष्ठ 4 का शेष.....

क्या महावीर दहिया जी अथवा हरपाल जी को प्रधान बनाया जायेगा? आपने लिखा है कि चिता की अग्नि समाप्त होने से पूर्व ही बलदेव जी सार्वदेशिक सभा के प्रधान बन बैठे। कल तक तो आप समाचार-पत्रों में आचार्य बलदेव जी को हरयाणा सभा का प्रधान कह रहे थे आज आपने सार्वदेशिक सभा का प्रधान तो स्वीकार किया। मैं आपसे पूछ रहा हूँ कि जब किसी देश के प्रधानमन्त्री अथवा मुखिया का स्वर्गवास हो जाये तो क्या उसका पद कभी रिक्त रहता है? आचार्य बलदेव जी को तो कैप्टन देवरत्न के स्वर्गवास के महीनों उपरान्त सार्वदेशिक सभा की कार्यकारिणी ने प्रधान पद पर सुशोभित किया है।

रही बात आर्यसमाज के संगठन और विघटन की, तो इसमें विघटन आप जैसे व्यक्ति स्वार्थवश संगठन में विघटन पैदा किया करते हैं। आचार्य बलदेव जी जैसे साधु व्यक्ति तो संगठन को संगठित करने का ही प्रयास किया करते हैं। जिस प्रकार से आप लोगों ने बिना आधार के झूठ-मूठ की हरयाणा सभा का गठन किया है। आप लोगों से मिलकर वैसे ही पंजाब के भाइयों ने झूठ-मूठ की सार्वदेशिक सभा का गठन किया जिसका प्रधान मिठाई लाल नाम के व्यक्ति को बनाया गया। आपकी तथाकथित सभा के कारण पंजाब के अनार्य लगभग 10 वर्ष से गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार पर कब्जा किये हुये थे और यही नहीं अपितु वहाँ पर बुरी तरह से लूट मचाई हुई थी। विश्वविद्यालय की करोड़ों रुपये की सम्पत्ति जिसमें हरयाणा सभा तथा देहली सभा का भी हिस्सा (भाग) है, जो कि विश्व-विद्यालय के हितों के हेतु खर्च होना चाहिए था उस सम्पत्ति को बेचकर अपने लिये तथा पंजाब सभा में भेजते रहे हैं। उसकी कुछ जूठन का भाग आपको भी प्राप्त होता रहा है। अब विश्वविद्यालय देहली सभा व हरयाणा सभा के आधीन यू.जी.सी. तथा न्यायालय के कारण आ चुका है जिस कारण आप लोगों को वहाँ की जूठन मिलनी बन्द हो गई है। आपका वास्तविक रोना यही है। आप अपनी तुच्छ जूठन के स्वार्थ में अपने राज्य हरयाणा तथा देहली राज्य के साथ गद्दारी कर रहे हैं। इससे घिनौना कार्य आर्य जाति के लिए और क्या हो सकता है? आचार्य बलदेव जी के नेतृत्व में आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा ने संस्कृत भाषा जो वेद एवं वैदिक संस्कृति की रक्षक है, उसकी रक्षा हेतु आन्दोलन किया। विदेशी मेहमानों व खिलाड़ियों को गोमांस परोसने के विरोध के आन्दोलन में सफलता प्राप्त की।

गोसेवा आयोग बनवाने व गोरक्षा आन्दोलन में सफलता प्राप्त की, शराबबन्दी व नशामुक्त हरयाणा बनाने हेतु ग्रामों, नगरों व कस्बों में प्रचार का आन्दोलन किया। सैकड़ों स्कूलों व कालेजों में वैदिक धर्म, संस्कृति व सभ्यता का प्रचार किया। रामपालदास जैसे ढोंगी, पाखण्डी के विरुद्ध आन्दोलन आदि अनेक आन्दोलन आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा ने करके राष्ट्र में नई जागृति उत्पन्न की है।

आपकी तथाकथित सभा ने कोई भी इस प्रकार का आन्दोलन समाज हित में किया हो, तो हमें बतायें? केवल मात्र छल-कपट द्वारा समाज व संस्थाओं की लूट के सिवाय आपकी तीनों वेशपन्थी अनार्य भ्रमात्री सभा तथा वधवा पन्थ सहित पंजाब की अनार्य सभा ने कोई कार्य किया हो वह समाज में कहीं भी दृष्टिगोचर नहीं हो रहा।

आपने आगे कहा है कि हमें करौंथा आन्दोलन हेतु निमन्त्रण नहीं भेजा गया। इसका उत्तर यह है कि करौंथा आन्दोलन में लगभग 40-50 हजार व्यक्तियों ने भाग लिया। आचार्य बलदेव तथा हरयाणा सभा के अन्य किसी भी अधिकारी ने किसी व्यक्ति व संस्था को निमन्त्रण पत्र नहीं भेजा। जिस किसी का महर्षि दयानन्द और आर्यसमाज से लगाव व स्नेह था, उस प्रत्येक व्यक्ति ने मन, वचन, कर्म से इस आन्दोलन में सहयोग दिया है। जिसका महर्षि व आर्यसमाज से लगाव व प्रेम नहीं केवल जो आर्यों की संस्थाओं पर कब्जा करने व लूट-खसूट हेतु आर्यसमाज में घुसपैठ किये हुए हैं, वे ऐसे आन्दोलनों में भला क्यों भाग लेने लगे?

मैंने सच्चाई समाज के समक्ष रखने का प्रयास किया है। उसके उपरान्त भी मेरे कटु शब्दों से किसी का हृदय यदि आहत हुआ है, तो उसके लिए मैं क्षमाप्रार्थी हूँ।

भजनोपदेशकों के लिए सभा से सम्पर्क करें—

प्रदेश की सभी आर्यसमाजें अपने आर्यसमाज के वार्षिकोत्सव या अन्य विशेष कार्यक्रमों के लिए भजनोपदेशकों के प्रोग्राम सुनिश्चित करने के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ रोहतक से एक मास पूर्व पत्र द्वारा सम्पर्क करें।

—सभामन्त्री

सोनू के बलिदान दिवस पर गाया गया भजन

टेक—धन्य-धन्य देव मात-पिता को जिसने ऐसे पुत्र को जाया।
रचने को इतिहास जगत् में सोनू नाम धराया॥

मा० रायसिंह आर्य

1. पिता बलवान की बल भक्ति का फल दिया शीलादेवी ने।
लोरी-लोरी देकर पुत्र को, बल दिया शीलादेवी ने।
धरती माँ और जननी माँ का तल दिया शीलादेवी ने।
माता निर्माता भवति का, हल दिया शीलादेवी ने।
आर्यजगत् में ग्राम भागपुर सदा-सदा जागा गाया।
रचने को इतिहास जगत् में सोनू नाम धराया॥
2. मात-पिता गुरुओं के सपने को, सोनू ने साकार किया।
तप संयम यात्रा से सोनू ने भवसागर को पार किया।
ज्ञान दर्शन चारित्र का सोनू ने सिंगार किया।
आचार्य बलदेव और विजयपाल को मौत का सुन्दर हार दिया।
पूत-सपूत एक भतेरा क्यों ज्यादा बोझा ठाया।
रचने को इतिहास जगत् में सोनू नाम धराया॥
3. देश-धर्म पर जो मरता है, उनकी कहानी याद सदा।
कुर्बानी करने वालों की कुर्बानी रहे आबाद सदा।
धर्म पर मरने वालों के सिर पर है सरताज सदा।
शूरवीर की रणभूमि में जिन्दा रहे औलाद सदा।
शूरा रण बिन केहरी वन बिन जिन सदा सूना बतलाया।
रचने को इतिहास जगत् में सोनू नाम धराया॥
4. सोनू के भागां तै खुलगे भागपुर के भाग सदा।
आयु, विद्या, यश, बल का मिलता रहे प्रसाद सदा।
नशे विषयों से दूर रहो, ये सोनी की फरियाद सदा।
जग में हँस-हँस जीओ सुखी रहे औलाद सदा।
ऋषि-मुनियों की कृपा से आर्य जी ने कहा गाया।
रचने को इतिहास जगत् में सोनू नाम धराया॥

—मा० रायसिंह आर्य, गांव-पो० घोघड़िया, जिला जीन्द

अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए

आर्यसमाज का आठवां नियम आर्यों में चेतना जगाने के लिए है। किसी आर्य का दाह-संस्कार होने के पश्चात् किरिया जैसी कोई रीति वेदों में नहीं है। इसलिए अगर शान्ति-सभा या प्रेरणा-सभा करनी है तो उसमें वेद ज्ञान का प्रचार करें।

जो न करने योग्य हो वह न करें—

1. मृतक का चित्र सभा में रखकर पुष्प-मालाएँ न पहनाएँ, पुष्पाञ्जलि न दें।
2. न ही सभा में बैठे किसी श्रोता को अज्ञानवश नतमस्तक होने दें।
3. न ही चित्र के समक्ष पैसे डालें।

जो करने योग्य है वह करें—

1. मृतक का चित्र बीच में लगायें (प्रतीक के तौर पर)।
2. दान पेटिका रखें जिस पर लिखा हो दान दीजिए वेदप्रचार और देवयज्ञ के लिए।
3. किसी वैदिक विद्वान् द्वारा वेदज्ञान का खूब प्रचार हो।

आर्यो जागो, अविद्या का नाश करो और विद्या की वृद्धि करो। जनसाधारण को संदेश दो कि मृतक की आत्मा मरने के कुछ देर बाद दूसरे शरीर में परमात्मा की व्यवस्था के अनुसार चली जाती है। इसलिए उसके गुणों को याद करें, उसके चित्र के समक्ष नतमस्तक न हों और न ही पैसे डालें।

अगर आप दान देना चाहते हैं तो वेदप्रचार और देवयज्ञ के लिए दे जिससे कि आपकी अन्तरात्मा शुद्ध और आपके जीवन को सार्थक बनाए।

आशा करता हूँ कि आप सभी अपने परिवारों को, समाज को जगाने का प्रयास करेंगे। **—प्रमोद बत्रा (आर्य), 1964 न्यू हाउसिंग बोर्ड कालोनी, हुडा सैक्टर-1, रोहतक**

उत्तराखण्ड पीड़ितों हेतु दानदाताओं की सूची

क्र.सं.	नाम-पता	राशि
1.	डॉ० देवीसिंह, गाँव बुआना लाखू जिला पानीपत	1,010/-
2.	महिला सत्संग मण्डली, माडल टाउन, डबल पार्क, रोहतक	3,090/-
3.	श्री अक्षय कुमार नांदल सुपुत्र श्री राजीव कुमार म०नं० 344/10, भरत कालोनी, रोहतक	2,100/-
4.	आर्यसमाज तिलक नगर, रोहतक द्वारा-श्री सुखवीर जी दहिया	5,100/-
5.	डॉ. जगदेवसिंह, तिलक नगर, रोहतक	500/-
6.	कंवरसिंह गुलिया, तिलक नगर, रोहतक	500/-
7.	श्री सुखवीर दहिया, तिलक नगर, रोहतक	500/-
8.	श्री रणबीर मान, कमल कालोनी, रोहतक	200/-
9.	आर्यसमाज गुढा रोड, गोहानामण्डी, जिला सोनीपत (द्वारा-सूबेदार करतारसिंह आर्य सभा कोषाध्यक्ष)	31,000/-
10.	श्री दलीपसिंह आर्य रिटायर्ड एस.डी.ओ. प्रधान आर्यसमाज चन्दाना, जिला कैथल	11,000/-
11.	श्री टेकराम आर्य, आर्यसमाज बरहाणा, जिला झज्जर	1,100/-
12.	आर्यसमाज बरहाणा, जिला झज्जर	1,100/-
13.	डॉ० राजपाल आर्य म०नं० 1458, सैक्टर-1, रोहतक	2,100/-
14.	चौ० जगदेवसिंह अहलावत, गाँव-धांधलान, जिला झज्जर	10,000/-
15.	श्री सुभाष चौहान म०नं० 1614, सैक्टर-2, रोहतक	500/-

—नवीन आर्य, सभा कार्यालय, रोहतक

सत्यार्थप्रकाश

समाज में फैले अन्धकार, अन्धविश्वास, गुरुडमवाद, भ्रूणहत्या आदि बुराइयों को मिटाने के लिये सत्यार्थप्रकाश हरयाणा के प्रत्येक घर तक पहुंचाने का यत्न किया जाये। —आचार्य बलदेव

आत्मिक शांति के लिये शुद्धता से करें आह्वान
प्रसन्न हो आशीर्वाद देंगे भगवान
शुद्ध एम डी एच हवन सामग्री

शुभ दिनों, शुभ कार्यों एवं पावन पर्वों में शुद्ध घी के साथ, शुद्ध जड़ी-बूटियों से निर्मित एम डी एच हवन सामग्री का प्रयोग कीजिये। शुद्धता में ही पवित्रता है। जहां पवित्रता है वहां भगवान का वास है, जो एम डी एच हवन सामग्री के प्रयोग से सहज ही उपलब्ध है।

अलौकिक सुगंधित अगरबत्तियां
एम डी एच रूह अगरबत्ती
एम डी एच मुस्कान अगरबत्ती
एम डी एच चन्दन अगरबत्ती
एम डी एच पराग अगरबत्ती
एम डी एच नवयुग अगरबत्ती

महाशियां दी हट्टी लि०
एम डी एच हाउस, 9/44, कीर्ति नगर, नई दिल्ली-15 फोन : 5937987, 5937341, 5939609
ब्रांचेज : • दिल्ली • गाजियाबाद • गुड़गांव • कानपुर • कलकत्ता • नागौर • अमृतसर

मै० कुलवन्त पिक्कल स्टोर, शाप नं० 115, मार्किट नं० 1, एन.आई.टी., फरीदाबाद-121001 (हरि०)
मै० मेवाराम हंसराज, किराना मर्चेन्ट, रेलवे रोड, रिवाड़ी-123401 (हरि०)
मै० मोहनसिंह अवतारसिंह, पुरानी मण्डी, करनाल-132001 (हरि०)
मै० ओम्प्रकाश सुरिन्द्र कुमार, गुड़ मण्डी, पानीपत-132103 (हरि०)
मै० परमानन्द साईं दित्तामल, रेलवे रोड, रोहतक-124001 (हरि०)
मै० राजाराम रिक्खीराम, पुरानी अनाज मण्डी, कैथल-132027 (हरि०)

आर्य-संसार

आचार्य वेदमित्र जी द्वारा घर-घर नवान्न यज्ञ

16 जून 2013 को रोहिणी दिल्ली श्री राहुल आर्य के घर यज्ञ व उपदेश कार्यक्रम हुआ। कार्यक्रम में पास-पड़ोस के आर्य उपस्थित हुए। 18 जून को श्रीचन्द जी के घर (भाऊ आर्यपुर) में नवान्न यज्ञ हुआ। 19 जून को लिडाना बृहद् यज्ञ व उपदेश कार्यक्रम हुआ। 20 को रोहतक श्री मंजीत जी के घर कार्यक्रम हुआ। 23 को श्री रामनिवास व 24 को श्री रामकंवार (भाऊ आर्यपुर) के घर बृहद् यज्ञ व उपदेश कार्यक्रम हुआ। आचार्य जी के सरल व सारयुक्त प्रवचन से वैदिक धर्मी हरयाणवी लोग नवसस्येष्टि को सवामणी इत्यादि नामों से करते आये हैं। नारनौल की तरफ कुंआ पूजन का मूल भी यही है।

—मनोज आर्य, भाऊ आर्यपुर, रोहतक

बाढ़ विभीषिक से त्रस्त जनों हेतु शान्तियज्ञ

सहारनपुर-आर्यसमाज सरदार पटेल मार्ग खलासी लाइन, सहारनपुर में उत्तराखण्ड तथा अन्य प्रदेशों में आयी बाढ़-आपदा में मारे गये लोगों की आत्मिक शान्ति हेतु बृहद् शान्तियज्ञ का आयोजन किया गया। पं० सोमदत्त आर्य एवं पुरोहित सुरेन्द्र चौहान ने सामूहिक प्रार्थना-उपासना के मन्त्रों का गान कराकर स्वस्तिवाचन के मन्त्रों का पाठ किया।

तत्पश्चात् विशेष यज्ञ किया गया जिसमें बाढ़-आपदा में मृत लोगों की आत्मिक शान्ति हेतु मन्त्र-शान्तिकरणम् से आहुतियाँ दी गईं। पूर्णाहुति के पश्चात् दो मिनट का मौन रखा गया। आपदा में फँसे लोगों की दीर्घायु हो ऐसी ईश्वर से प्रार्थना की गई। वरिष्ठ आर्य सदस्य राजसिंह चौहान की अध्यक्षता में एक आपदा राहत-कोष स्थापित किया गया जिससे प्राप्त राहत सामग्री एवं कोष पीड़ित परिवारों को भेजा जायेगा। शान्तिपाठ से पूर्व भजनों के समागम में डॉ० राजवीर वर्मा ने ईश्वर से पीड़ित परिवारों को शान्ति प्रदान करने की प्रार्थना की।

—रविकान्त राणा उपमन्त्री

आवश्यक सूचना

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का त्रिवार्षिक साधारण अधिवेशन (चुनाव) दिसम्बर 2013 को होना है, इसलिए सभा से सम्बद्ध सभी आर्यसमाजों के अधिकारियों से निवेदन है कि वे अपना तीन वर्षीय (2010-2011, 2011-2012, 2012-2013) रिकार्ड जैसे कि सभासदों का सदस्यता रजिस्टर, वार्षिक शुल्क रजिस्टर, साप्ताहिक सत्संग में उपस्थिति रजिस्टर, कार्यवाही रजिस्टर आदि विवरण तैयार रखें।

सभामन्त्री श्री सत्यवीर शास्त्री, सभा वेदप्रचाराधिष्ठाता आचार्य अभयसिंह कुण्डू, श्री सत्यव्रत शास्त्री जून 2013 मास से आर्यसमाजों का रिकार्ड निरीक्षण करने हेतु दौरा कर रहे हैं। जो आर्यसमाजें अपने रिकार्ड का निरीक्षण नहीं करवायेंगी तथा जिनका रिकार्ड ठीक करने की हिदायत देने पर भी ठीक नहीं किया जायेगा उन आर्यसमाजों के प्रतिनिधि फार्म स्वीकार नहीं किये जायेंगे। कृपया अपनी आर्यसमाज का रिकार्ड शीघ्र तैयार करके सभा के उपरोक्त अधिकारियों से निरीक्षण अवश्य करवा लें।

—आचार्य विजयपाल, प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, रोहतक

उत्तराखण्ड बाढ़पीड़ितों के लिए सहायता की अपील

उत्तराखण्ड में बारीश, बाढ़ और भूस्खलन से आई भीषण आपदा ने विनाश जैसे हालात पैदा कर दिये हैं। तबाही के मंजर रोंगटे खड़े कर देने वाले हैं। सैकड़ों लोग मारे गये हैं, सैकड़ों लापता हैं और हजारों-हजार को मदद की आवश्यकता है। यह समय राष्ट्रधर्म निभाने, पीड़ितों के साथ खड़े होने और उन्हें यह भरोसा दिलाने का है कि हम सब उनके साथ हैं। हम सब मिलकर उत्तराखण्ड के विपदाग्रस्त और असहाय लोगों के जीवन को संबल प्रदान कर सकें, इसके लिए आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा रोहतक ने '**उत्तराखण्ड बाढ़पीडितों की सहायतार्थ कोष**' बनाया है तथा पर्याप्तों का सहयोग मिल रहा है।

आप आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ रोहतक के कार्यालय में नकद या बैंक ड्राफ्ट/मनीआर्डर द्वारा 'आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ रोहतक' के नाम से राशि भेज सकते हैं। दानदाताओं के नाम आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के साप्ताहिक समाचार-पत्र 'आर्य प्रतिनिधि' में प्रकाशित किये जायेंगे।

आचार्य बलदेव	आचार्य विजयपाल	सत्यवीर शास्त्री	सूबे. करतारसिंह
संरक्षक	प्रधान	मंत्री	कोषाध्यक्ष

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ, रोहतक

चैरिटेबल ट्रस्ट मोगा में चरित्र-निर्माण शिविर

9 से 16 जून तक पूज्य महात्मा चैतन्यमुनि जी एवं यतिमां सत्यप्रिया जी ने मोगा (पंजाब) में पी-मार्का सरसों के तेल के सुप्रसिद्ध उद्योग द्वारा संस्थापित श्री देवीदास केवलकृष्ण चैरिटेबल ट्रस्ट में अपनी ज्ञानगंगा प्रवाहित करते रहे। उल्लेखनीय है कि इस संस्थान में इसके स्थापना काल से ही प्रतिदिन प्रातःकाल यज्ञ-सत्संग तथा सायंकाल भी सन्ध्या-सत्संग का आयोजन किया जाता है।

इसके अतिरिक्त समय-समय पर योग-ध्यान शिविरों, चरित्र निर्माण शिविरों तथा विशेष रूप से विद्वानों को बुलाकर उनके प्रवचनादि कराने की व्यवस्था की जाती है। यह संस्थान मोगा निवासियों के लिए किसी तीर्थ के समान हो गया है। वर्तमान में प्रमुख समाजसेविका बहिन इन्दुपुरी जी बड़ी ही श्रद्धा एवं उत्साह के साथ संस्थान की समस्त गतिविधियों को कार्यरूप देती हैं।

इस बार उपरोक्त तिथियों में 150 कन्याओं का चरित्र-निर्माण शिविर बहुत ही सफलता के साथ पूज्य महात्मा चैतन्यमुनि जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। एक ओर जहाँ कन्याओं को मूर्तिकला, नृत्यकला, संगीत कला का अभ्यास कराया गया वहीं दूसरी ओर उन्हें वैदिक मान्यताओं से भी संवाद की कक्षा में प्रशिक्षित किया गया। संवाद की कक्षा यूँ तो प्रतिदिन पूज्य महात्मा जी ही लेते थे मगर कन्याओं को मुख्यचिकित्सा अधिकारी, सहायक जिलाधीश, सीनियर पुलिस सुपरिटेण्ड, पंडित सुनील शास्त्री, बहिन इन्दुपुरी, श्री सत्यप्रकाश उप्पल, डॉ० कोछड़ आदि अनेक महानुभावों ने भी सम्बोधित किया। इस अवसर पर '**विजय-याग**' भी किया गया।

आर्यसमाज का गौरव अमर शहीद..... प्रथम पृष्ठ का शेष.....

भाई-बहन, धन-धान्य सभी कुछ तो इनके पास था, वे भी अपने-अपने घरों में सुख से मौज-मस्ती मना सकते थे, वे सब भी सब सांसारिक सुख भोग सकते थे लेकिन उन्होंने हम देशवासियों के लिये, अपने धर्म और संस्कृति की रक्षा के लिए अपने जीवनों को हँसते हुए धर्म की बलिवेदी पर स्वाहा कर दिया। गुरुजी आप प्रायः यह भी कहा करते हैं कि.... मैंने ब्रह्मचारी उदयवीर को बीच में ही रोक कर कहा कि तुम कहना क्या चाहते हो?

''गुरुजी! मैं यही कहना चाहता हूँ कि मैं प्रेय नहीं श्रेय मार्ग अपनाना चाहता हूँ। मैं आजीवन ब्रह्मचारी रहकर देश, धर्म और समाज के लिये समर्पित होना चाहता हूँ।''

''उदयवीर! भावुक मत बनो यह मार्ग बहुत कठिन है फिसलने की, अपितु गिर पड़ने की अत्यन्त संभावना है, यह कांटों भरा मार्ग है।''

''आपने हमें कांटों पर ही चलना सिखाया है। मुझे औरों की तरह एक अध्यापक मात्र या सामान्यजन बनकर जनसंख्या वृद्धि करके देश पर भार नहीं बढ़ाना है।'' ''क्या, खूब सोच-समझ लिया है?''

''हाँ गुरुजी! मैंने अच्छी प्रकार पूरा समय लगाकर विचार कर लिया है। मैं अपने निश्चय पर दृढ़ हूँ। आप मुझे दीक्षा दें।''

''ब्रह्मचारी! तेरे इस निश्चय पर मैं अत्यन्त प्रसन्न हूँ, परन्तु अभी आयु कम है?''

''गुरुजी! आप ही कहा करते हैं—''रण, भक्ति और दान, तीनों काम जवान।'' फिर आयु भी कम नहीं, मैं अब पच्चीसवें वर्ष में हूँ।''

''क्या माता-पिता को समझा लोगे?'' ''उन्हें मैं स्वयं समझा लूँगा और यदि वे नहीं समझेंगे तो भी मैं अब पीछे नहीं मुड़ूंगा।''

उसके दो महीने बाद वार्षिक महोत्सव पर प्रातः गुरुकुल की यज्ञशाला पर मैंने ब्रह्मचारी उदयवीर को नैष्ठिक ब्रह्मचर्य की दीक्षा दी। यज्ञवेदी पर उपस्थित उसके माता-पिता ने भी अपने पुत्र को सहर्ष आशीर्वाद दिया। बड़ा ही लोमहर्षक दृश्य था। खचाखच भरे यज्ञमण्डप में उपस्थित नर-नारी भावविभोर हो रहे थे, जब ब्रह्मचारी उदयवीर काषाय वस्त्र धारण करके और दण्ड धारण करके भिक्षा की परम्परा का निर्वहन करते हुए भिक्षा मांगने लगा। किं बहुना, मैंने विचार किया, ब्रह्मचारी अभी अधूरा है, विद्वत्ता नहीं है। इसे संस्कृत से एम.ए. या आचार्य करना चाहिये। इसे वेद और दर्शन पढ़ने चाहियें। इसे सबसे पहले व्याकरण का विद्वान् होना चाहिये, जिसका स्वयं का निर्माण अधूरा है वह दूसरों का क्या निर्माण करेगा। गुरुकुल का आचार्य भी बनेगा तो भी विद्वान् तो होना ही चाहिए।

क्रमशः अगले अंक में.....

स्वास्थ्य चर्चा मधुमेह (Diabetes)

❑ स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती, मो० : 9416133594

मधुमेह आधुनिक सभ्य समाज की प्रमुख व्याधियों में से एक है। जिस प्रकार कुछ अन्य प्रमुख व्याधियों को आधुनिक वातावरण ने प्रभावित किया है उसी प्रकार मधुमेह भी आधुनिक वातावरण से प्रभावित है। यही कारण है कि लगभग सभी विकसित देशों में इस व्याधि से पीड़ितों की संख्या में द्रुतगति से वृद्धि हो रही है। आधुनिक चिकित्सा विज्ञान में चूंकि इस व्याधि का स्थायी उपचार अभी तक नहीं खोजा जा सका है।

अत: व्याधि का विस्तार एवं पीड़ितों की संख्या वृद्धि होना स्वाभाविक है। यदि मधुमेह के कारणों का अध्ययन किया जाये तो स्पष्ट एवं दुष्पाचय आहार का सेवन करने वाले तथा श्रमविहीन दैनिकचर्या वाले मनुष्य प्राय: इस व्याधि से पीड़ित होते हैं। इसीलिए सम्भवत: इसे बड़े आदमियों या सम्पन्न व्यक्तियों का रोग कहा जाता है। आयुर्वेद के लिए यह व्याधि सर्वथा नवीन एवं अपरिचित नहीं है।

आयुर्वेद शास्त्र में यद्यपि इसका स्वतन्त्र विवेचन अन्य व्याधियों की भाँति नहीं किया गया है। फिर भी सभी प्रमेहों में मधुमेह की प्रधानता एवं गंभीरता सुस्पष्ट है। आचार्यों का यह भी स्पष्ट कथन है कि सभी प्रमेह उपेक्षा किये जाने पर अन्ततोगत्वा मधुमेह को प्राप्त हो जाती है। इसे व्याधि की व्यापकता का आभास सहज ही मिल जाता है। अत: यहाँ इस बात का कोई महत्त्व नहीं है कि आयुर्वेद शास्त्र में इस व्याधि का पृथक् एवं स्वतन्त्र परिगणन एवं व्याख्यान क्यों नहीं किया गया है? किन्तु यह स्पष्ट है कि प्रमेह के बीस प्रकारों में इस व्याधि की सम्प्राप्ति का विवेचन अधिक व्यवस्थित रूप से किया गया है। अत: इसे अनावश्यक विवादास्पद रूप में न लेते हुए इस विषय में मात्र इतना ही कहना है कि प्राचीन काल में भी इस व्याधि का अस्तित्व था और उसकी व्यवस्थित चिकित्सा का प्रावधान भी शास्त्रों में किया गया है। इस व्याधि के परिचय, निदान, सम्प्राप्ति, लक्षण आदि के विषय में अधिक विस्तार में नहीं जाते हुए केवल इतना ही कहना अभीष्ट होगा कि आयुर्वेद के अनुसार यह वातिक प्रमेह का एक भेद है। इसके प्रमुख लक्षणों में शरीरगत माधुर्य और मधुसम मूत्रत्याग इसके प्रमुख लक्षण हैं। यह दो प्रकार से शरीर में उत्पन्न हो सकता है। एक सन्तर्पणजन्य, जो आवृत वातजन्य होता है और दूसरा अपतर्पण जन्य, जो धातुक्षयजन्य होता है। उपर्युक्त उत्पत्ति क्रमानुसार प्रथम प्रकार के रोगी स्थूल और द्वितीय प्रकार के रोगी कृश होते हैं। इसका कथन यहाँ इसलिए आवश्यक है कि आयुर्वेद में चिकित्सा के समय इस स्थिति का विचार किया जाता है।

महर्षि चरक ने वातज प्रमेहों के साथ-साथ मधुमेह की सम्प्राप्ति का भी स्वतन्त्र रूपेण उल्लेख कर व्याधि का महत्त्व स्वीकार किया है। प्रकुपित हुआ वह वायु शिथिल और अधिक मेद वाले पुरुष के शरीर में चारों तरफ भ्रमण करता हुआ रूक्षता के कारण कषाय रस से मिलकर मधुर स्वभाव वाले ओज को लेकर जब मूत्राशय में अभिवहन करता है तब वह मधुमेह को उत्पन्न करता है। इस सम्प्राप्ति का अनुसरण करता हुआ मधुमेह रोग मनुष्य के शरीर में आश्रय करता है।

चरक ने यद्यपि निदान-स्थान में ओजोमेह को ही मधुमेह के नाम से वर्णित किया है और महर्षि सुश्रुत ने मधुमेह के स्थान पर 'क्षौद्रमेह' शब्द का व्यवहार किया है। यह वस्तुत: कोई मौलिक भेद न होकर मात्र पाठभेद है। अत: इन्हें मधुमेह के ही पर्यायवाची शब्द समझना चाहिये।

इनके लक्षणों का अन्तर अत्यन्त सामान्य है। अत: इनमें पृथकता की अनिवार्यता नहीं समझी जानी चाहिये। मधुमेह में सामान्यत: कषाय, मधुर, पाण्डु और रूक्ष मूत्र की प्रवृत्ति बतलाई गई है, जबकि ओज क्षय की स्थिति में मूत्र में रूक्षता, कषैलापन और मधुरता स्वभावत: आ जाती है। मधुरता जो श्लेष्म वृद्धि का परिचायक है, के कारण मूत्र त्याग की प्रवृत्ति बारम्बार होती है। यह मधुमेह का एक महत्त्वपूर्ण लक्षण माना जाता है। यदि यथासमय मधुमेह का समुचित उपचार नहीं किया जाता है, तो कालान्तर में वह असाध्य व्याधि का रूप धारण कर लेता है।

मधुमेह के विषय में आधुनिक दृष्टिकोण भी अत्यन्त सुस्पष्ट हैं। तदनुसार मूत्र के साथ स्थायी रूप से शर्करा की प्रवृत्ति को मधुमेह कहते हैं। सामान्यत: हम अपने दैनिक आहार में जिस शक्कर या चीनी का सेवन करते हैं उसका पचन हमारी आंतों में होता है। पचन के परिणाम स्वरूप वह शर्करा मधुशर्करा में परिवर्तित हो जाती है, जो शरीर की प्रमुख शक्ति है। आन्त्र में कोष्ठ महासिरा के द्वारा यह मधुशर्करा यकृत् में पहुँचती है और वहीं इसका संचय भी होता है। यकृत् से वह शरीर की आवश्यकता के अनुसार रक्त द्वारा मांसपेशियों तथा अन्य अवयवों में पहुँचती है, जहाँ उसका समुचित उपयोग होता है। इस प्रकार यकृत् में उसका संचय स्थिर रहता है। क्रमश:

सम्पर्क-योगस्थली आश्रम,
बुचौली रोड, महेन्द्रगढ़

क्या कारण है? सोचो!

(1) आप देख रहे हैं एक पौराणिक का बच्चा स्वयं पौराणिक बन जाता है। बिना कहे मन्दिर में जाकर घण्टी बजाता है। शिवलिंग पर पानी चढ़ाता है। परन्तु अफसोस है कि आर्यसमाजी का बच्चा आर्यसमाज में नहीं आता है।

(2) आर्यसमाज के दैनिक/साप्ताहिक सत्संग में उपस्थित कम क्यों रहती है, जबकि मासिक चन्दा देने वालों की संख्या साठ-सत्तर है?

(3) आर्यसमाज जैसी श्रेष्ठ संस्था में पद के लिए लड़ाई-झगड़े क्यों होते हैं?

(4) अयोग्य आचरणहीन व्यक्ति को आर्यसमाज का प्रधान या मन्त्री क्यों बनाया जाता है?

(5) विद्वान् उपदेशकों के प्रवचनों का प्रभाव क्यों नहीं होता?

(6) महर्षि दयानन्द ने आर्यसमाज की स्थापना किस उद्देश्य से की थी उसे पूरा करने के लिए क्या हो रहा है? क्या करना चाहिये?

(7) आर्यसमाज के विद्वानों से निवेदन है कृपया अपने विचार लिखें। मैं भी आगामी अंकों में इनका कारण लिखूँगा।

—देवराज आर्यमित्र, WZ-428, हरीनगर, नई दिल्ली-64

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा में बिक्री हेतु निम्न साहित्य उपलब्ध हैं। कृपया इसका लाभ उठावें।

क्र०	पुस्तक का नाम		मूल्य
1.	प्रो० शेरसिंह : एक प्रेरक व्यक्तित्व	—	20-00
2.	धर्म-प्रवेशिका	—	10-00
3.	धर्म-भूषण	—	12-00
4.	वैदिक सिद्धान्त सार	—	20-00
5.	सत्यार्थप्रकाश	—	30-00
6.	वैदिक उपासना पद्धति	—	8-00
7.	पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती जीवन चरित	—	10-00
8.	ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका	—	50-00
9.	संस्कारविधि	—	30-00
10.	हैदराबाद सत्याग्रह में हरयाणा का योगदान	—	30-00
11.	पं० गुरुदत्त विद्यार्थी जीवन चरित	—	25-00
12.	महर्षि दयानन्द तथा वेदों पर आक्षेपों का उत्तर	—	15-00
13.	आर्यसमाज का कायाकल्प कैसे हो?	—	10-00
14.	पंजाब का हिन्दी रक्षा आन्दोलन	—	100-00
15.	स्मारिका-2002	—	10-00
16.	प्राणायाम का महत्त्व	—	15-00
17.	महाराणा प्रताप तथा उनके वंशज	—	10-50
18.	स्मारिका 1987	—	10-00
19.	स्मारिका 1976	—	10-00
20.	अमर हुतात्मा भगत फूलसिंह जीवनी	—	15-00
21.	अमर शहीद पं० रामप्रसाद 'बिस्मिल' जीवनी	—	30-00
22.	स्वामी श्रद्धानन्द जीवनी (कल्याण मार्ग का पथिक)	—	80-00

—वानप्रस्थी अत्तरसिंह स्नेही, सभा पुस्तकाध्यक्ष

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के स्वामित्व में मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक **सत्यवीर शास्त्री** ने आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, दयानन्दमठ, रोहतक से मुद्रित एवं कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक-124001 से प्रकाशित। पत्र में प्रकाशित लेखसामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं।
प्रत्येक विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक न्यायालय होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जाएगी।